The University of Fiji
Library
Saweni, Lautoka

THE UNIVERSITY OF FIJI

SCHOOL OF HUMANITIES & ARTS
DEPARTMENT OF LANGUAGE, LITERATURE & COMMUNICATION

HIC 312: Translation

Semester 2 2013

Duration of Test: 3 hours
Reading Time: 10 minutes
Marks: 100

Name: ________________
I.D Number: ___________

निर्देश

क. जो भी प्रश्न पूछे जा रहे हैं उन्हें ध्यान से पढ़िए और उनका सही -सही उत्तर देने का प्रयास कीजिए ।

ख. इस परीक्षा पत्र में तीन भाग हैं । सभी भाग अनिवार्य है ।

ग. सभी प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए ।

भाग एक

अंक: 40

नीचे दिए गए प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए ।

अंक: 10

प्रश्न एक

अनुवाद की आवश्यकता आज विश्वव्यापी आवश्यकता बन चुकी है । इस पर आप अपने विचार लिखिए ।

अंक: 10

प्रश्न दो

शब्दानुवाद, भावानुवाद, छायानुवाद, रूपांतरण तथा सहज अनुवाद की संक्षेप में व्याख्या कीजिए ।

अंक: 10

प्रश्न तीन

आपके विचार में श्रेष्ठ अनुवाद किसे कहेंगे ?

अंक: 10

प्रश्न चार

अनुवाद करते समय हमें किन किन साधनों की आवश्यकता पड़ती है तथा उनका क्या महत्व है ?

अंक: 10

प्रश्न पाँच

किन -किन क्षेत्रों में तथा किस प्रकार तत्काल भाषांतरण की आवश्यकता पड़ती है ?

अंक: 10

प्रश्न छ

आपके विचार में अनुवाद कला है या विज्ञान अथवा कौशल । उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए ।

भाग दो: हिन्दी - अंग्रेजी अनुवाद

अंक: 3[illegible]

नीचे दिए गए छ: अनुच्छेदों में से किन्ही तीन अनुच्छेदों का अनुवाद अंग्रेजी में कीजिए ।

1.

किताबें

ए. कीर्ति वर्द्धन

बचपन में
जब नींद नहीं आती थी
माँ की गोद में
लेट जाता था ।
माँ
मुझे लोरी सुनाती
मेरे बालों को
प्यार से सहलाती
और
मैं सो जाता था ।
आज भी
जब मुझे
नींद नहीं आती
मैं किताब पढ़ता हूँ
और
कुछ ही देर में
नींद के आगोश में
चला जाता हूँ
सपनों में
खो जाता हूँ
शायद
किताबें ही
माँ का
प्रतिरूप हैं ।

2·

बारह जनवरी सन् 1863 को सुबह छः बजे कोलकाता के पास सिमूलिका नामक गाँव में एक बालक का जन्म हुआ। बचपन में नरेंद्र तथा बाद में विवेकानंद नाम से उन्हें जाना गया। उनके पिता का नाम विश्वनाथ दत्त था। वे कलकत्ता हाईकोर्ट के संपन्न वकील थे। इनकी माता का नाम भुवनेश्वरी था। वे इनको विश्वेश्वर कहकर पुकारती थीं, क्योंकि उन्होंने पुत्र कामना से काशीपति विश्वेश्वर भगवान की मनौती की थी। बाल्यावस्था में नरेंद्र बड़े नटखट थे, परंतु उनके हृदय में धर्म के प्रति आदर एवं श्रद्धा की भावना भरी हुयी थी। वे पुराण, रामायण, महाभारत आदि की कहानियाँ सुनने अपनी माँ के पास बैठ जाते थे।

नरेंद्र का रुझान प्रारंभ से ही धर्म की तरफ था। अतः उनके भीतर एक बेचैनी व्याप्त थी। वे जहाँ भी जाते, यही पूछते 'आपने ईश्वर को देखा है ?' परंतु इसका उत्तर कोई न दे पाता, जिससे उनकी धर्म पिपासा शांत नहीं हुई। अंत में नरेंद्र को एक ऐसा गुरु मिल ही गया, जिसने उनकी शंका का संतोषजनक उत्तर देकर समाधान किया। उस गुरु का नाम था रामकृष्ण परमहंस। एक दिन वे नरेंद्र के पड़ोस में आये। वहाँ नरेंद्र ने एक ईश्वर स्मृति भजन सुनाया। उसे सुनकर परमहंस बड़े प्रसन्न हुए और दक्षिणेश्वर में अपने आश्रम पर आने को कहा। दक्षिणेश्वर में परमहंस से मिलकर नरेंद्र बहुत प्रभावित हुए और उन्हें अपना गुरु मान लिया। परमहंस भी इनसे बड़ा स्नेह करते थे और कहा करते थे 'नरेंद्र तो नारायण है। इसका हृदय, प्राण, मन बड़ा निर्मल है।'

3·

दिवाली सन्देश

जोगिन्द्र सिंह कंवल
बा।

दिवाली उत्सव हम सब के लिए हर्षोल्लास, प्यार-मुहब्बत, मेल-मिलाप और शुभकामनाओं का सन्देश लेकर आता है।

दिवाली की रात जब हज़ारों दीप एक साथ जगमगाते हैं तो लगता है जैसे सारा वातावरण मुस्कराने लगा हो।

यह यूं कह लीजिए कि सारी कायेनात रोशनी और रंग देखने के लिए, करवट ले जाग उठी हो।

इस अमावस की रात में बच्चे, बूढ़े और नौजवान दीपों की बारात में शामिल होने के लिए गलियों और सड़कों पर उत्तर आते हैं।

प्रकाश का आकर्षण होता ही ऐसा है जिस की सारी मानवजाति आशिक है चाहे वह दीपों का प्रकाश हो, सूरज या चाँद का।

जिस समाज में, मेलों, उत्सवों, त्योहारों, समारोहों और पर्वों के रंग नहीं होते, उस समाज का जीवन उत्साहहीन और निर्जीव-सा रहता है, खड़े पानी-सा जिस में ना कोई लहर उठती हो और ना कोई तरंग मचलती हो।

दिवाली जैसे त्योहार हमारे सत-रंगे अतीत को छूते रहते हैं और भारतीय संस्कृति के गगन को रोशन करते रहते हैं।

सभी भारतीय त्योहार हमारी संस्कृति के पेड़ के ऐसे फूल है जिनकी महक उन सब देशों में फैली हुई है जहाँ हिन्दुस्तानी मूल्य के लोग जा बसे हैं।

कई प्रकार के बाहरी प्रभावों के बावजूद हमने अपनी सभ्यता और शिष्टाचार को सम्भाल कर रखा हैं ताकि दूसरे देशों में हमारी पहचान बनी रहे।

दिवाली का त्योहार सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम् जैसी भावनाओं को हमारे दिलों में चिराग जलाता है। तभी शायद दिवाली के दिन हम प्रेम, हमदर्दी मित्रता और सहन-शीलता की बातें करते हैं ताकि हमारे मनों से नफरत, वैर-विरोध, ईर्ष्या और जलन का अन्धेरा दूर हो जाए।

देखो तो सजधज कर
फिर आई है दिवाली
दीपों की पायल पाँवों में
मोमबत्तियों के कंगन
फुलझड़ियों का घूंघट डाले
लगती है पूरी दुल्हन

A-

दीपावली शुभ सन्देश

कमलेश आर्य,
कुल सचिव- दी यूनिवर्सिटि ओफ फीजी

दीपावली के इस पुनीत अवसर पर मैं यह शुभ सन्देश देश के हर एक प्राणी को भेंट कर रहा हूँ। दीपावली, हिन्दुओं के लिए एक सर्वोत्तम एवं मंगलमय त्योहार है जिसे हम सपरिवार अपने मित्रों और पड़ोसियों के साथ हर्ष और उल्लास के साथ मनाते हैं और आपस में खुशियाँ बाँटते हैं।

वेदों के अनुकूल दीपावली एक वैदिक कृषि प्रधान त्योहार है। मौसम अनुकूल फसल कट कर घर आ जाती है और नए अनाज से किसान वर्ग यज्ञ आदि करके नए फसल का ग्रहण करते हैं और अपने मज़दूर भाई-बहनों में बाँटते हैं। इस त्योहार का यह एक अनोखा रिवाज़ है।

यज्ञ करना, ईश्वर को धन्यवाद देना और मिल बाँट के नए अनाज से बने पकवान खाना सदियों पुरानी यह परम्परा आज भी बरकरार है ताकि हम अपनी संस्कृति बनाए रख सकें। इस परम्परा में पारिवारिक और सामाजिक संगठन के साथ साथ आपसी प्यार भी बढ़ता है।

दीपावली सद्भावना जागृत करती है और भेदभाव को दूर करती है। परिश्रम करके अपने वेदनापूर्ण जीवन को सार्थक बनाने की प्रेरणा देती है।

संगठित रूप से एक विचार और एक मन होकर समस्याओं का हल निकालने और उसपर अमल करने की प्रेरणा देती है।

दीपमालाएं अमावस्या के घने अन्धकार को दूर करके हमें अपने जीवन के अन्धकार और अज्ञानता को दूर करने की प्रेरणा देती हैं।

इसलिए हमें असतो मां सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्यों अमृतं गमय को अपने जीवन का आदर्श बनाना चाहिए। दीपावली अहिंसा प्रधान पर्व है। वो ईश्वरस्तुति प्रार्थना और उपासना से परिपूर्ण है। हिंसा तामस् गुण है, इन्सानियत के भाव का हनन करता है और मनुष्य को क्रूर बना देता है, गुण सम्पन्न व्यक्ति पापी बन जाता है। हमें हिंसा के मार्ग से हटने और अहिंसा के मार्ग को अपनाने की प्रेरणा दीपावली देती है। हमें अहिंसक बनने का व्रत धारण करना चाहिए।

दीपावली के इस पुनीत अवसर पर अपने धर्म, जाति और देश की उन्नति के लिए संगठित मत से योगदान देने का व्रत धारण करना चाहिए। भेदभाव और पक्षपात को दूर कर सर्वोन्नति के लिए अग्रसर होने का निश्चय लेना चाहिए। दीपावली प्रेरणा से भरी त्योहार है इसलिए ईश्वर से विनती यही है कि फीजीवासियों को सन्मार्ग दिखाए और देश के प्रति सद्भावना जागृत करें।

दीपावली सभी को शुभ हो।

5. मानव सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। उसमें मन और बुद्धि है। सोचने-समझने की शक्ति है। मानव की सार्थकता उसके मन के कारण है। मन के द्वारा ही उसके चिंतन-मनन की प्रक्रिया चलती है। मनुष्य का मन अपने आप में एक रहस्य है। एक क्षण में मन यहाँ है तो दूसरे ही क्षण आकाश की ऊँचाई को नापता दिखाई देता है। मन की गति और शक्ति अपार है। मन को चंचल कहा गया है। इसमें विचारों, संकल्पों-विकल्पों की चंचल लहरें उठती रहती हैं। मन को बाँधना अर्थात सन्मार्ग पर लाना ही मन को जीतना है। मनुष्य की जीत-हार उसके मन पर ही निर्भर होती है। मन में निराशा की भावना का आना ही मनुष्य की पराजय को सुनिश्चित कर देता है। संकल्प और दृढ़ विचारों से मन की विजय होती है। विकल्प या विचलित विचारों का व्यक्ति सभी ओर से निराश हो जाता है। वस्तुतः मन के सशक्त होने पर ही शरीर सशक्त हो सकता है, मन के दुर्बल होने पर शरीर निष्क्रिय हो जाता है। जिसका मन सशक्त होता है, जीत उसी की होती है।

6. विधाता की इस सृष्टि में यदि कोई सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण और अमूल्य वस्तु है तो वह है समय। क्योंकि जो समय एक बार चला गया, वह पुनः लौटकर नहीं आता। अतः समय का सदुपयोग करने में ही समझदारी है। एक-एक क्षण का सदुपयोग ही मानव जीवन के उज्ज्वल, सुखपूर्ण, आनंददायक जीवन का निर्माण करता है। समय का सदुपयोग करने वाले व्यक्तियों का जीवन सार्थक और गरिमामय बनता है। इसके विपरीत समय का दुरुपयोग करने वाला व्यक्ति अपने पाँव पर स्वयं कुल्हाड़ी मारता है। वह जीवन की दौड़ में पिछड़ कर निराशा, असफलता और उदासी का भागीदार बनता है। समय का अपव्यय करना जीवन रूपी धन का अपव्यय करना है। समय भौतिक धन से भी अधिक मूल्यवान है। भौतिक धन तो एक बार नष्ट हो जाने पर पुनः प्राप्त हो सकता है लेकिन समय नष्ट होने पर पुनः प्राप्त नहीं होता। समय का पहिया निरंतर घूमता रहता है। समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। उसकी दृष्टि में अमीर-गरीब, शिक्षित-अशिक्षित सभी समान हैं। सृष्टि का कोई भी व्यक्ति समय का सदुपयोग कर अपने जीवन को सफल बना सकता है। जो समय को नष्ट करता है, समय उसे नष्ट कर देता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को समय का सदुपयोग करना चाहिए।

भाग तीन: अंग्रेजी - हिन्दी अनुवाद

अंक: 30

नीचे दिए गए छ: अनुच्छेदों में से किन्ही तीन अनुच्छेदों का अनुवाद हिन्दी में कीजिए।

1. *Education is preparing the young to educate themselves.*

Education is children continually asking questions.

Education is making people easier to govern but impossible to enslave.

Indeed, education is a better safeguard of liberty than a standing army.

Education is unsettling the minds of the young to inflame their intellects.

Education is making one's mind a pleasant place to spend the rest your life.

Education is not a preparation for life; Education is life itself.

And yet education is never completed until a man dies.

Education is what survives when what has been learnt has been forgotten.

Education is learning to express your ignorance in scientific terms.

Education is learning a lot about how little you know.

Education is being caught up into the expanding universe of thought.

Education is equipping our children to walk through doors of opportunity.

Education is learning some useful skill for well-being of the community.

Education is not making a man clever, but making a man good.

2.

Diwali time limit observed

By TEVITA VUIBAU

THE Fiji Police Force says it is thankful to the public for sticking to the curfew for the lighting of firecrackers and helping them to ensure that all had a safe and prosperous Diwali.

Speaking to this newspaper Inspector Atunaisa Sokomuri said police were out in force last night to make sure that there were no mishaps during the festival of lights.

"That's one of the things that we were most happy about, the fact that at the end of the night, people stuck to the allocated time for the lighting and setting off of firecrackers which was from five in the afternoon to midnight," Insp Sokomuri said.

"After 12 our officers on patrol saw that there were no firecrackers being set off and we are very thankful to the public for respecting the curfew."

Meanwhile, in an unrelated incident police raided a farm in Salua on Saturday and uprooted 16 plants believed to be marijuana. Insp Sokomuri said police arrested a 33-year-old man in connection with the raid while the plants were being sent to Koronivia for analysis.

A mother's plea

/ SALASEINI MOCEIWAI

HILE some spent their iwali in style and in the omforts of their homes on ınday, 38-year-old Gheeta 'ati struggled to light wet rewood at her Namara iri home in Labasa to :-heat left over food for reakfast.

A single mother for ou( ) decade, Ms Wati ruggles everyday to look r food and money for survival.

When this newspaper isited her home, she was ucked in the middle of ie old partly-damaged ouse trying to wipe the et floor.

Ms Wati said they had o food and money to buy uff for Diwali.

"I have been living in is house with my son for bout three years now and e struggle everyday for ur lives," Ms Wati said

"We don't have any ource of income but I alays try my best to send y son to school with hatever money or food we ave.

"My son didn't go to chool three days last week eca e there was no food t h .e."

"Special occasions such s Diwali are just like any ther normal day of the ear for us because we relly don't have what others ave in order to celebrate.

"We only have leftover ice from last night and his is what we are going to ave again this morning.

"I find it hard to light the ire because the firewood is et as a result of the heavy rain. Right now, we are just hoping for a miracle to happen so that we are able to celebrate the festival of lights.

"Life is hard for us ever since my husband left me about 10 years ago but I am just doing whatever I can to provide for us."

Ms Wati said the owner of the house they were staying in had also asked them to vacate.

"I am just pleading with my friend to give me some more time so I can figure out where we will go next.

"During rainy weather, the house leaks and I have to do everything in my might to ensure that our belongings are not soaked.

"We don't have a proper bathroom, kitchen and toilet. When we want to use the toilet, we will have to use the mangrove," she said.

Ms Wati added during high tide the water woulc fill the bottom of the house since it was built in a mangrove swamp.

"I am appealing to members of the public for hel because I am in dire nee of a house and I also wan my son to grow up withou this poor life."

Gheeta Wati holds an empty lantern inside her Namara Tiri home in Labasa on Sunday morning.

4.

At the time of recruitment the labourers were not given the true information about the wages, cost of living and economic opportunities in Fiji. When they reached Fiji they alleged that they were deceived by the arkatis (recruiting sub-agents in villages) in India and felt that the task they performed was much harder than they had expected. They laboured from dawn to dusk and the number of working hours exceeded the limit stipulated in the agreement.

They were treated by Indian sardars and European overseers in a very inhuman and insulting manner. Europeans called them "coolies". Even in the census taken in 1881 they were entered in the records as "coolies" not as "Indians".

In the morning before the labourers commenced the work, the attendance was taken by the overseers who called them by the numbers and not by their names. From this situation originated the word Kolumber (call number). The labourers started calling the overseer "Kolumber" who did not mind this nickname. Except for a few, overseers were generally rude, harsh and stubborn people.

5.

Environment means the surroundings. Land, water, air, plants, animals, solid wastes and other things that are surrounding us constitute our environment. Man and environment are closely intertwined with each other, to maintain a balance of equilibrium in nature.

Different groups of people working in different areas express it in various ways. When physical scientists talk about environment they generally refer to the physical environment that comprises the three inter locking systems the Atmosphere, the Hydrosphere and the Lithosphere.

Biologists often refer to biological environment consisting of all living organisms of the Biosphere. Similarly social scientists refer to the social, cultural, economic and organizational environment.

Hence environment may be defined as "the sum of all social, cultural, economical biological, physical and chemical factors surrounding the 'man' to give necessary protection to him."

6.

Discipline is the structure that helps the child fit into the real world happily and effectively. It is the foundation for the development of the child's own self discipline. Effective and positive discipline is about teaching and guiding children not just forcing them to obey. As with all other interventions aimed at pointing our unacceptable behaviour, the child should always know that the parent loves and supports him or her. Trust between parent and child should be maintained and constantly built upon.

Parenting is the task of raising children and providing them with the necessary material and emotional care to further their physical, emotional, cognitive and social development.

Disciplining children is one of the most important yet difficult responsibilities of parenting, and there are no shortcuts. The physician must stress that teaching about limits and acceptable behaviour takes time and a great deal of energy. The hurried pace of today's society can be an obstacle to effective discipline.

समाप्त